ISSN: 0973-0583

jाष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में प्राचीन शिक्षा व्यवस्था की उपयोगिता

सुदामा जी

शोध छात्र, मंगलायतन विश्वविद्यालय, बेस्वान अलीगढ़ (उ0 प्र0)

डॉ० धर्मेन्द्र सिंह

पर्यवेक्षक, मंगलायतन विश्वविद्यालय, बेस्वान अलीगढ़ (उ0 प्र0)

सार

आधुनिक युग में शिक्षा का उद्देश्य समझदार और जिम्मेदार प्रकार के व्यक्तियों का विकास करना ही शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य होता है। अत: उनको तर्कशील बनाना चाहिए। विज्ञान के वर्तमान युग में हर क्षेत्र में तर्क प्रभावी हो गया है। किसी भी बात को किसी के कहने या अन्धविश्वास या रहस्यवाद से प्रभावित होकर नहीं स्वीकारना चाहिए। बच्चों को आरम्भ से ही चिन्तन करने और स्वस्थ तक विकसित और प्रस्तुत करने की शिक्षा देनी चाहिए। वर्तमान कि शिक्षा नीति में ऐसी शिक्षण विधियों का विकास होना चाहिए जिससें छात्रों में तर्कव्यक्ति तथा उनका सर्वांगींण विकास हो सके। शिक्षा परम्परा के विकल्प सुझा सकती है, उनके लाभों को बता सकती है, वे मार्ग बता सकती है जिससे उद्देश्य और पुरस्कारों को प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षा मानसिक क्षितिज को विस्तृत रहती है, आकांक्षाओं को ऊपर उठाती है और लोगों को प्रयोग करने की प्रवृत्ति को अपनाने की ओर झुका सकती है। राष्टीय शिक्षा नीति में समयानुसार परिवर्तन होते रहे और आज एक बार फिर 34 सालों के बाद शिक्षा व्यवस्था को दूरस्थ एवं समय की आवश्यकता के अनुसार विभिन्न शिक्षा के क्षेत्र में विचार करने एवं सुधार करने की आवश्यकता ने एनईपी 2020 को लागू करने की आवश्यकता हुई। वर्तमान शिक्षा नीति में प्राचीन शिक्षा का आधारशिला आज भी देखने को मिलता है इसी सोच के साथ अपने शोध कार्य को पूरा करना है।

शब्द कुंजी- शिक्षा, प्राचीन काल शिक्षा, वर्तमान शिक्षा, उपयोगिता ।

पृष्ठभूमि

मानव समाज का एक अंग है। वह समाज के अन्दर रहकर ही अपने कार्यकलापों को करता है। भारतीय समाज एक बहुत ही उच्चकोटि का समाज है। जिसके प्रत्येक व्यक्ति को सभी प्रकार के अधिकार मिले हुए हैं। इन्हीं अधिकारों के बारे में समझ शिक्षा प्रदान करती है। मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रें में शिक्षा का स्थान महत्वपूर्ण है यह समाज को उत्कृष्टता तथा जीवन के सभी क्षेत्रों को प्रभावित करती है, परन्तु स्वयं शिक्षा का इतिहास इतना स्पष्ट और लोकप्रिय नहीं है जितना होना चाहिए। शिक्षा के ऊपर अभी पूर्ण और स्पष्ट कार्य नहीं हो पाया है जिसके कारण इसकी पहचान अपूर्ण है। इसका एक अन्य कारण शोधार्थियों द्वारा इस विषय के प्रति उपेक्षा भी है। डॉ0 आर०के० मुखर्जी तथा ए० एस० अल्तेकर को छोड़कर शायद ही कोई लेखक या शोधार्थी हो जिसने भारतीय शिक्षा पर स्तरीय कार्य किया हो। शोध की विस्तृत सम्भावनाएँ इस क्षेत्र में विद्यमान हैं। इसी विचार को ध्यान में रखकर विभिन्न कालीन शिक्षा का अध ययन तथा वर्तमान शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में शिक्षा व्यवस्था में इसकी उपयोगिता पर अध्ययन करना है।

प्राचीन भारतीय शिक्षा के दो भाग हैं।[1] वैदिक कालीन शिक्षा [(2)] बौद्धकालीन शिक्षा। वैदिक कालीन शिक्षा के भी दो उपभाग किए गये हैं- (ऋ) ऋग्वैदिक कालीन शिक्षा (2) उत्तर वैदिक कालीन शिक्षा इसी तरह बौद्धकालीन शिक्षा के भी दो रूप दृष्टिगोचर होते हैं- प्रथम, बौद्ध काल में प्रचलित परम्परागत वेदकालीन शिक्षा तथा द्वितीय, बौद्ध मठों और विहारों में दी जाने वाली शिक्षा। प्राचीन भारतीय शिक्षा पर किये गये समस्त शोधों का आधार वेद, संहितायें व बौद्ध ग्रन्थ है। जिन्हें प्राथमिक एवं द्वितीयक शोध-सामग्री के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

प्राचीन भारतीय शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में अभी तक निम्नलिखित स्तरीय कार्य किये गये हैं।

डॉ० एस०के० दास, 1930 ने ''प्राचीन हिन्दुओं की शिक्षा प्रणाली'' पर महत्वपूर्ण कार्य किया हैं डॉ०ए०एस० अल्तेकर ने ''प्राचीन भारत में शिक्षा'' पर किया है। श्री वेद मित्र ने ''प्राचीन भारत में शिक्षा'' पर स्तरीय कार्य किया है। श्री मुखर्जी 1981 विश्वभारती ने ''प्राचीन भारत

में जन शिक्षा के ऊपर धर्म के प्रभाव'' का अध्ययन अपने शोध कार्य में किया है। श्री के॰पी॰ पाण्डे, अवध विश्वविद्यालय 1984 ने प्राचीन भारत की शिक्षण सस्थाएँ पर शोध कार्य किया है। श्री सी॰एस॰ मिश्रा, बी॰एस॰यू॰ 1974 ने 'स्मृतियों में शिक्षा' नामक शोध अध्ययन में स्मृतिकालीन शिक्षा पर प्रकाश डाला है। श्री के॰एन॰ मिश्रा 1979. गोरखपुर विश्वविद्यालय ने 'उपनिषद् कालीन शिक्षा प्रणाली' पर अपना शोध-अध्ययन प्रस्तुत किया है। श्री एम॰सी॰ शुक्ला, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी 1982 ने 'जातक कालीन शिक्षा' पर शोध अध्ययन किया है।

इन सभी स्तरीय शोध कार्यों के अतिरिक्त कोई भी ऐसा नहीं हुआ है जिसमें प्राचीन भारत की सम्पूर्ण शिक्षा का तुलनात्मक और विस्तृत अध्ययन हुआ हो। प्राचीन शिक्षा की इसी कमी को ध्यान में रखकर इस शोधा ग्रन्थ ''वैदिक कालीन तथा बौद्ध कालीन शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में शिक्षा व्यवस्था में इसकी उपयोगिता'' में इस प्रकार का अध्ययन किया गया है।

शोधार्थी ने इसी बिन्दु को ध्यान में रखकर एक ऐसे शोध अध्ययन का बीड़ा उठाया, जिसमें दो परस्पर धर्मो एवं परिस्थितियों में विकसित दो शिक्षा व्यवस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन तथा वर्तमान में शिक्षा व्यवस्था (एन.ई.पी.-2020) के सन्दर्भ में इसकी उपयोगिता का अध्ययन करना है। प्राचीन वैदिक काल जो वैदिक धर्म के प्रारम्भ तथा वैदिक धर्म के स्वर्णकाल के रूप में जाना जाता है की शिक्षा व्यवस्था से जनसामान्य ऊब क्यों गया था तथा उसके विरोध में शिक्षा पति क्यों लोकप्रियता को प्राप्त हुई? दोनों शिक्षा प्रणालियों में क्या समानताएँ थीं और क्या विभिन्नताएँ थीं आदि का प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए शोधार्थी ने दोनों कालों (वैदिक एवं बौद्ध) की शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन तथा वर्तमान शिक्षा एन.ई. पी. 2020 के सन्दर्भ में इसकी उपयोगिता को जानने का निश्चय किया।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन ''वैदिक कालीन तथा बौद्ध कालीन शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में शिक्षा व्यवस्था में उसकी उपयोगिता'' में एतिहासिक शोध विधि का प्रयोग हुआ है।

शोध अध्ययन का सीमांकन

प्रस्तुत शोध-अध्ययन का सीमांकन निम्नवत् है।

1. वैदिक एवं बौद्धकाल की शिक्षा की तुलना केवल निम्नलिखित बिन्दुओं तक ही सीमित है- शिक्षा का अर्थ, परिभाषा, प्रकृति एवं उद्देश्य, प्राथमिक शिक्षा, धार्मिक शिक्षा व्यावसायिक शिक्षा, साहित्यिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, नारी शिक्षा, उच्च वर्ग की शिक्षा, जन शिक्षा।

2. कालक्रमानुसार शोध अध्ययन वैदिक काल से बौद्ध काल तक परिसीमित है।

शिक्षा का अर्थ एवं परिभाषाएँ

शिक्षा एक व्यापक शब्द है जिसके अन्तर्गत समस्त प्रकार की क्रियाएँ और कार्य आते हैं। शिक्षा को आंग्ल भाषा में 'एजूकेशन' कहते है। एजुकेशन शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के ''एडूकेटम" से हुई जिसका अर्थ है शिक्षित करना और आगे बढ़ाना अथवा अन्दर से विकास। शिक्षा बच्चें के अन्दर उपस्थित जन्मजात प्रवृत्तियों को वातावरण के सम्पर्क में लाकर बाहर की ओर विकसित करती है। और बालक का सर्वांगींण विकास करती है। शिक्षा समाज की उन्नति के लिए भी एक आवश्यक तथा शक्तिशाली साधन है।

शिक्षा के विभिन्न प्राचीन काल

1. वौदिक काल 2. बौद्धकाल

वैदिक कालीन शिक्षा का अर्थ व परिभाषाएँ

1. वैदिक काल का समय 2500-500 ईसा पूर्व के मध्य माना जाता है।
2. वैदिक काल में शिक्षा का मुख्य विषय वेद होता था। वेद शब्द की उत्पति विद् धातु से हुई है जिसका अर्थ होता है 'ज्ञान प्राप्त करना'।

वैदिक दर्शन वेदों में निहित वह दार्शनिक चिन्तनधारा है जो इस दृष्टि को ईश्वर द्वारा निर्मित मानती है और यह मानती है कि एक मात्र ईश्वर ही इस सृष्टि का मूल तत्व है। यह आत्मा को ईश्वर का अंश मानती है और यह प्रतिपादन करती है कि मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य आत्मनुभूति, ईश्वर प्राप्ति अथवा मोक्ष है जिसे ज्ञान योग, कर्म योग एवं भक्ति योग द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

3. वैदिक कालीन शिक्षा के भी दो उपभाग किए गये हैं- 1. ऋग्वैदिक कालीन शिक्षा 2. उत्तर वैदिक कालीन शिक्षा

बौद्ध कालीन शिक्षा का अर्थ एवं परिभाषाएँ

बौद्ध शिक्षण पद्धति का आरम्भ स्वयं महात्मा बुद्ध ने किया था, जिसमें सरल सुबोध जन भाषा में जीवन के तत्वों की चर्चा थी। व्याख्यान और प्रश्नोत्तर के आधार पर

विचारों का आख्यान किया गया था। उन्होंने धर्म के प्रचार में प्रसांगिक, उपमा, दृष्टान्त, उदाहरण, कथा आदि का समावेश किया था। जिससे उसका तत्व श्रोताओं को सरलता से बोधगम्य होता था। विनय और धर्म की शिक्षा उपासक को दी जाती थी, जिसमें महात्मा बुद्ध के धर्म सिद्धान्तों का नियोजन होता था। उनका धर्म था निर्वाण के मार्ग का निर्देशन करना। उनके धर्म का लक्ष्य था मनुष्य को सांसारिक वेदना और कष्ट से मुक्त करना। महात्मा बुद्ध ने विद्या और ज्ञान के महत्व को स्वीकार करते हुए समस्त दुःखो और अज्ञान का उनके आलोक से समाप्त होना माना है तथा ज्ञान से ही मुक्ति स्वीकार की है। जगत का जो रूप है, उससे मनुष्य आबद्ध है। यह आबद्धता अविद्या के कारण और परिबद्ध हो जाती है किन्तु अविद्या के अन्त से इसकी परिहबद्ध नहीं रह जाती। समस्त संसार दुःखमय है। दुःख का उद्भव तृष्णा और अज्ञान से होता है। विद्या अथवा ज्ञान द्वारा निरोध कर देने पर दुःख का निरोध हो जाता है।

''बौद्ध कालीन शिक्षा भारतीय दर्शन की वह विचारधारा है जो इस ब्रह्माण्ड को न तो केवल वस्तुजन्य मानती है और न केवल आध्यात्मिक तत्व द्वारा निर्मित, यह इसे परिणामशील मानती है। यह आत्मा-परमात्मा के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करती और यह प्रतिपादित करती है कि मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य निर्वाण की प्राप्ति है, जिसे चार आर्य सत्यों के ज्ञान एवं आर्य अष्टांग मार्ग तथा त्रिरत्न के पालन द्वारा प्राप्त किया जा सकता है''

शिक्षा का उद्देश्य

किसी भी देश, समाज अथवा काल की शिक्षाओं का ज्ञान तीन प्रश्नों में क्यों, क्या तथा कैसे? के उत्तरों में निहित होता है। क्या के उत्तर से पाठ्यक्रम कैसे के उत्तर से शिक्षण विधि तथा क्यों के उत्तर से शिक्षा के उद्देश्य क्या रहे हैं, उन्हें समाज धर्म एवं संस्कारों ने कहाँ तक प्रभावित किया है? का ज्ञान प्राप्त होता है। अग्रिम पंक्तियों में काल क्रमानुसार उन्हीं उद्देश्यों का वर्णन किया गया है।

वैदिक काल में शिक्षा के उद्देश्य

वैदिक जीवन दर्शन में मोक्ष को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। इसलिए वैदिक कालीन शिक्षा का प्रधान उद्देश्य मोक्ष था। दूसरे अन्य उद्देश्य इसी उद्देश्य से सम्बन्धित थे। अर्थववेद[10] में विद्या अथवा शिक्षा तथा उसके परिणाम का उल्लेख किया गया है। जिसमें श्रद्धा, मेधा, प्रज्ञा, धन, आयु और अमृतत्व को सम्मिलित किया गया है। अर्थात् विद्या का आन्तरिक लक्ष्य, अमृत प्राप्त अर्थात् मोक्ष प्राप्त है।

बौद्धकालीन शिक्षा के उद्देश्य

ईसा पूर्व पाँचवी शदी से बौद्ध धर्म का प्रारम्भ माना जाता है और इसी समय से बौद्ध शिक्षा का उद्भव हुआ। ब्राह्मण काल की शिक्षा व्यवस्था जन शिक्षा का माध्यम न बन सकी। फलतः महात्मा बुद्ध ने जनसाधारण को जीवन का व्यावहारिक स्वरूप प्रदान किया और व्यावहारिक धर्म और व्यावहारिक शिक्षा वर्गो के लिए प्राप्त कराने को प्रयास किया। बौद्ध युगीन शिक्षा प्रणाली तथा प्राचीन शिक्षा पद्धति में बहुत अधिक साम्य था। गौतम बुद्ध के सभी नियम स्वनिर्मित नहीं थे। वरन् हिन्दू धर्म व संन्यासियों के नियम स्वनिर्मित नहीं थे। वरन् हिन्दू धर्म व सन्यासियों के नियम भी संग्रहित थे। बौद्ध संस्कृति के मूल केन्द्र संघ एवं विहार थे। उन्हीं संघों में लघुगीन शिक्षा पुष्पित एवं पल्लवित हुई थी। बौद्ध युगीन शिक्षा का मुख्य उद्देश्य महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का मुख्य उद्देश्य भगवान बुद्ध की शिक्षाओं को प्रचारित व प्रसारित करना तथा छात्र का शारीरिक, मानसिक बौद्धिक व आध्यात्मिक विकास करना था। जिससे कि वह दुःखों से छुटकारा प्राप्त कर निर्वाण प्राप्त कर सके।

वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के सन्दर्भ में प्राचीन शिक्षा व्यवस्था की उपयोगिता

वैदिक काल में शिक्षा गुरुकुलों में प्रदान की जाती थी। जिसमें छात्र और गुरु का सम्बन्ध पिता और पुत्र के समान था। बौद्धकाल में शिक्षा की व्यवस्था बौद्ध मठों और विहारों में प्रदान की जाती थी और ये मठ पूरी तरह बाहर से अलग स्थान पर होते थे।

आज की वर्तमान शिक्षा में प्राचीन शिक्षा व्यवस्था के अनुरूप ही नवोदय विद्यालयों, आश्रम पद्धति के स्कूलों बोडिंग एवं नर्सरी स्कूल स्थापित किए गये हैं, जिनमें अध्यापक और छात्र साथ-साथ रहते हैं और बाहरों से दूर एकान्त स्थानों पर शान्त वातावरण में पढ़ते हैं। स्कूलों की यह पद्धति आज के युग में काफी सहायक सिद्ध हुई है और प्राचीन शिक्षा व्यवस्था के उसी स्वरूप को लाने में काफी सहायक हुई है।

इसमें अध्यापक और छात्र का आपस में परिवार की तरह व्यवहार होता है और अध्यापक छात्र के सर्वांगीण विकास के लिए पूरी तरह समर्पित होते हैं, इसके साथ-साथ छात्र भी गुरु के नजदीक होने से अपने आपको पूरी तरह

सुरक्षित महसूस करते है और अपने गुरु के प्रति पूरी तरह समर्पित रहते हैं।

1. वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा तथा सीखने के नींव को रखना।
2. तथा बुनियादि साक्षरता एवं संख्या ज्ञान: सीखने के लिए एक तात्कालिक आवश्यकता और पूर्वशर्त।
3. ड्रॉपआवट बच्चों की संख्या को कम करना।
4. स्कूलों में पाठ्यक्रम और शिक्षण शास्त्र रुचिकर होने पर बल दिया गया है। तथा विद्यार्थियों की सम्रग विकास की बात कही गई है।
5. छात्रों के लिए प्रायोगिक अधिागम होना अतिआवश्यक हैं।
6. छात्रों के लिए बहुभाषावाद और भाषा की शक्ति एवं कौशलों, क्षमताओं तथा प्रत्येक छात्रों की सहायता की भी प्रावधान हैं।
7. जो कि प्राचीन शिक्षा से जुड़ाव आज भी रखता हैं।

धार्मिक शिक्षा के द्वार प्राचीन काल में सभी वर्गों के व्यक्तियों के लिए खुले थे। वैदिक काल में वेदों को पढ़ने का अधिकार और गुरुओं को अपने अनुसार धर्म की शिक्षा देने की छूट थी। बौद्ध काल में बौद्ध संघों में प्रवेश करने वाले सभी व्यक्तियों को धर्म की शिक्षा-दीक्षा दी जाती थी।

आज भी चूँकि भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है इस कारण सभी धर्मों के व्यक्तियों में सामान्जस्यता विधमान है, सभी धर्मो के व्यक्तियों के लिए शिक्षा ग्रहण करने की खुली छूट है। इस कड़ी में ईसाइयों, पारसीयों, सिक्खों, मुसलमानों, बौद्धों, जैनियों को अपनी-अपनी संस्थाएँ खोली हुई है जिसमें सभी धर्मों के व्यक्तियों को शिक्षा ग्रहण करने की खुली छूट दी गई है।

वैदिक काल और बौद्धकाल में साहित्यिक विषयों की शिक्षा विशेष रूप से प्रदान की जाती थी। जिससे व्यक्ति की साहित्य के प्रति रूचि पैदा हो और भारतीय संस्कृति का पूरी तरह से ज्ञान हो। वेदों और अन्य प्राचीन ग्रन्थों के ज्ञान के बिना शिक्षा बेकार समझी जाती थी। आज भी वैदिक संस्कृति और बौद्ध संस्कृति के उसी स्वर्ण युग को वापिस लाने के लिए, नैतिक शिक्षा, वेदों की शिक्षा, बौद्ध संस्कृति के बहुत से विषयों की शिक्षा और अन्य प्राचीन काल की साहित्यक शिक्षाओं को आज की शिक्षा में समाहित किया जा रहा है।

प्राचीन काल में हस्तकला के 64 विषयों की शिक्षा तकनीकी शिक्षा के अन्तर्गत दी जाती थी आज की शिक्षा व्यवस्था में वैदिक काल एवं बौद्धकाल की तकनीकी शिक्षा की लगभग सभी हस्तकलाओं को आधार मानकर शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था की गई है।

तकनीकी शिक्षा के अन्तर्गत प्राचीन काल की सभी हस्तकलाओं को आधार माना गया है और विभिन्न प्रकार की शिक्षण संस्थाओं में पालीटेकनिक, इन्जीनियरिंग आदि विषयों की शिक्षा प्रदान की जा रही है, जो छात्रों को तकनीकी क्षेत्र में विकसित करने में काफी सहायक सिद्ध हुई है।

ऋग्वैदिक काल में स्त्री को पुरुष के समान ही शिक्षा देने की व्यवस्था थी, उत्तरवैदिक काल में यह अधिकार घट जाने से स्त्री दशा में ह्रास हुआ। बौद्ध काल में दोबारा स्त्रियों के लिए शिक्षा के द्वार खुल जाने से सामाजिक उन्नति हुई।

वर्तमान शिक्षा नीति 2020 में भी नारी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए उसमें उस पुरानी पद्धति के आधार पर स्त्रियों को शिक्षा देने की व्यवस्था की गई है। लड़के-लड़कियों को पुरानी शिक्षा की तरह ही एक समान शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार है।

स्त्रियों की उचित शिक्षा व्यवस्था के लिए **केन्द्र** सरकार और राज्य सरकारें प्रयासरत है। लड़कियों की शिक्षा एक निश्चित आयु तक बिल्कुल मुफ्त रखी गई है। जिससे सभी लड़कियाँ शिक्षा ग्रहण कर सके। दूर-दराज के गाँवों में भी स्त्रियों को शिक्षा के प्रति जागरूक करने के लिए अभियान चलाये जा रहे हैं। प्रौढ़ शिक्षा नारी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा एक सराहनीय कदम है।

आज पुरुष और महिलाओं में अन्तर को समाप्त करने के लिए सभी को शिक्षा प्रदान की जा रही है। समाज का कोई भी वर्ग ऐसा नहीं है जिसे शिक्षा से वंचित रखा गया हो। आज नारी पुरुष के कन्धो से कन्धा मिलाकर चल रही है और उसने सभी क्षेत्रें में अपनी एक अलग पहचान बनाई है।

प्राचीन काल की उच्चवर्ग की शिक्षा के द्वारा सभी वर्गों के व्यक्तियों के लिए खुले थे। परन्तु, आज उच्च वर्ग के व्यक्तियों ने अपने स्कूल सिर्फ उच्च वर्ग के बच्चों को ध्यान में रखकर स्थापित किए हैं, जिसके उदाहरण कॉन्वेन्ट स्कूल, पब्लिक स्कूल आदि है जो आम बच्चों की पहुँच से बहुत दूर हैं। प्राचीन काल की जनशिक्षा को आज के वर्तमान शिक्षा नीति 2020 के तहत स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में

देखा जा सकता है। आज शिक्षा के द्वार सभी जनसमूह के लिए खुले हुए हैं और भारत सरकार का निरन्तर यही प्रयास है कि कोई भी व्यक्ति शिक्षा से वंचित न रहे इसलिए प्राथमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक सभी को शिक्षा दिलवाने के लिए सरकार हर सम्भव प्रयास कर रही है और वैदिक कालीन और बौद्धकालीन शिक्षा प्रणालियों को आधार मानकर वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ बनाने का प्रयास कर रही है।

निष्कर्ष:

1. वर्तमान शोध-अध्ययन के निष्कर्षों एवं परिणामों का शिक्षा के निम्नलिखित क्षेत्रों में योगदान हो सकता है।
2. प्राचीन शिक्षा व्यवस्था के स्वर्ण युग के अनुसार वर्तमान में उस शिक्षा का प्रयोग करके भारतीयता पर ज्यादा जोर दिया जा सकता है।
3. प्राचीन शिक्षा पद्धति जिसमें गुरु और शिष्य साथ-साथ रहते थे लेकिन समय परिवर्तन के कारण गुरु और शिष्य में निरन्तर जो दूरियाँ बढ़ रही हैं। वर्तमान शोध अध्ययन के अनुसार यदि वैदिक और बौद्ध कालीन शिक्षा का प्रयोग वर्तमान समय में किया जाए तो गुरु और शिष्यों के सम्बन्धों में निकटता आ सकती है।
4. प्राचीन काल की शिक्षा के विषयों को आज के युग में अपनाकर संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों को बढ़ावा दिया जा सकता है।
5. यदि विद्यार्थियों को वैदिक एवं बौद्ध कालीन धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाए तो उन्हें नैतिक एवं मौलिक रूप से श्रेष्ठ बनाया जा सकता है।
6. पश्चात्य साहित्य से समाज में जो विसंगतियाँ आ गयी हैं। यदि विद्यार्थियों को वेदों और बौद्ध धर्म ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाए तो इन विसंगतियों को समाज से विसर्जित किया जा सकता है।

वर्तमान शोध अध्ययन का एकमात्र उद्देश्य वैदिक एवं बौद्ध कालीन शिक्षा के विभिन्न आयामों की तुलना तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में शिक्षा व्यवस्था में इसकी उपयोगिता को बताना था। अत: दोनों कालों की शिक्षा के विभिन्न आयामों की तुलना का सार वर्तमान अग्रिम पंक्तियों में प्रस्तुत किया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. यजुर्वेद, तैत्तिरीय सहिता, सम्पादक, ए० वेबर, बलिन, 1971-72।
2. यजुर्वेद, काठक संहिता, सम्पादक, एल०वी० श्रोडर, लाइपजिंग, 1900-11।
3. जातक, सम्पादक, फाउस बोल, ट्रबनर ऐण्ड कं०, लन्दन 1890।
4. थेरगाथा, सम्पादक, भागवत, एन० के० बम्बई, 1937, अनुवाद मिसेज रीज डेविड्स, लन्दन, 1909।
5. विनयपिटक, अनुवादक टी0 डब्ल्यू एवं ओल्डेनबर्ग, आक्स्फ़ोर्ड, 1881-85।
6. अंगुत्तर निकाय, सम्पादक, आर0 मारिस, तथा ई0 हार्डी, पालि टेक्स्ट्स सोसाइटी, लन्दन, 1883-1900
7. दीर्घनिकाय, सम्पादक, रीज डेविड्स एवं ई0 कार्पेन्टर, पी0 टी0, लन्दन, 1890-1911।
8. मज्झिमनिकाय, सम्पादक, वी0 ट्रेकनर और आर0 चामर्स, लन्दन, 1948-51।
9. संयुक्त निकाय, सम्पादक, लियोन फियर, एम० एवं मिसेज रीज डेविड्स, लन्दन, 1888-1904।
10. सुत्तनिपरत, सम्पादक, ऐण्डरसन एवं स्मिथ, पी० टी० एस०, लन्दन 1948।
11. विमानवत्थु, सम्पादक, राहुल सांकृत्यायन, रंगून, 1937।
12. जातक, सम्पादक, फाउस बोल, ट्रबनर ऐण्ड कं0, लन्दन 1890।
14. थेरगाथा, सम्पादक, भागवत, एन० के० बम्बई, 1937, अनुवाद मिसेज रीज डेविड्स, लन्दन, 1909।
15. अल्तेकर, ए० एस० : एजूकेशन इन एनसिएंट इण्डिया
16. अवस्थी, शशि : प्राचीन भारतीय समाज, पटना, 1981.
17. अल्तेकर, ए० एस० : पोजीशन अफ़ वश्मेन इन हिन्दू सीविलाइजेशन.
18. आचार्य, नरेन्द्रदेव : बुद्ध धर्म दर्शन ।
19. उपाध्याय, वी० एस० : वश्मन इन ऋग्वेद ।
20. एयंगर, पी०टी०एस० : लाइ इन एनसिएंट इण्डिया
21. बरूआ:ए. हिस्ट्री आफ प्री. बुद्धिस्टिक इण्डियन फिलॉसफी।
22. चौबे, सरयू प्रसाद चौबे, अखिलेश : भारतीय शिक्षा उसकी समस्याएँ, प्रवृत्तियाँ और नवाचार, मेरठ, 1995

❖❖❖